

पद २५९

(राग: यमन जिल्हा - ताल: त्रिताल)

अब कैसी सखी री जाऊं पनियारी ॥ध्रु.॥ जमुनके नीर तीर गऊ
चरावे । बन्सी बजावत कन्हैया री ॥१॥ माणिक के प्रभु नाथ
कृष्णजी ताकुं कांपे गवाल थरारी ॥२॥